www.anvikshikijournal.com

ISSN 0973-9777
वर्ष - 7 अंक - 6
नवम्बर - दिसम्बर 2013
GISI Impact Factor 0.2310

भारतीय शोध पत्रिका

आन्वीक्षिकी

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.
एम.पी.ए.एस.वी.ओ. एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन में प्रकाशित

मनीषा प्रकाशन

आन्वीक्षिकी
भारतीय शोध पत्रिका
वर्ष-7 अंक-6 नवम्बर-2013

शोध प्रपत्र

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता में प्रतीक विधान- डॉ. कला जोशी 1-4
समकालीन स्त्री विमर्श : दिशा और दृष्टि- डॉ. वी. रामा पद्मजा 5-8

डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त का काव्य-वैभव : एक अध्ययन- डॉ. आशा वर्मा 9-14
हिन्दी का विकास- डॉ. रमेश टण्डन 15-20

हिन्दी का बागी शायर : दुष्यन्त कुमार- डॉ. कला जोशी 21-28
भक्ति की गति के सामाजिक रूपान्तर / संशोधन- डॉ. वी. रामा पद्मजा 29-33

बौद्ध महासंगीतियाँ- डॉ. संतोष कुमार 34-37
प्रथम प्रादेशिक राज्य के रूप में मगध का उद्भव- मधुलिका सिन्हा 38-43

उच्च गांगेय क्षेत्र के मुद्रानिक्षात्तों से प्राप्त मुद्राएँ [रजत आहत मुद्राओं के विशेष संदर्भ में]- संवेदना सिंह 44-48
मनरेगा उपलब्धि एवं चुनौती- सीमा सिंह 49-50

प्रारम्भिक स्तर पर शैक्षणिक समस्याओं के निवारण में जनशिक्षकों की भूमिका का अध्ययन- श्रीमती अमृता गुप्ता 51-57
शिक्षा का अधिकार अधिनियम -2009 का कार्यान्वयन : चुनौतियाँ एवं समाधान- अजीजुर्रहमान 58-63

महिला सशक्तिकरण हेतु सरकारी प्रयास एवं संवैधानिक व्यवस्थायें- गौरव सिंह 64-66
प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों की कार्यप्रणाली में अन्तर का अध्ययन [ग्वालियर के संदर्भ में]- श्रीमती निर्मला गुप्ता 67-70

जातक के आधार पर गौतम बुद्ध का वृक्षों के दृष्टान्त से उपदेश- डॉ. अभय कुमार 71-74

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2013) 7,15-20
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 13 अक्टूबर 2013

हिन्दी का विकास

डॉ. रमेश टण्डन*

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित *हिन्दी का विकास* शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र का लेखक मैं *रमेश टण्डन* घोषणा करता हूँ कि लेखक के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेता हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देता हूँ। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देता हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देता हूँ।

सारांश

यूरेशिया से निकलकर भारतीय आर्यभाषाओं से होते हुए एक लम्बी यात्रा तय करते हुए पश्चिमी हिन्दी का एक भेद खड़ी बोली आज की हिन्दी के रूप में स्थापित है। उदाहरणार्थ हिन्दी के 'यह' शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार करने पर हम पाते हैं कि संस्कृत का 'एषः'- पालि में 'एस'- प्राकृत में 'एसो'- अपभ्रंश में 'एहो'- हिन्दी में 'यह' बना। आज यह हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा, कई राज्यों की राजभाषा, समाचार की भाषा, पत्र-पत्रिकाओं की भाषा एवं आम बोल-चाल की भाषा है जिसके विकास की गाथा को समझना आवश्यक है।

विश्व भाषा

सम्पूर्ण विश्व के भाषा को 04 खण्ड में बांटते हैं :

01.अफ्रीका खण्ड : 1. बुशमैन, 2. बांटू, 3. सूडान, 4. हैमेटिक-सेमेटिक।
02.यूरेशिया खण्ड : 1. हैमेटिक-सेमेटिक, 2. काकेशियन, 3. यूरात-अल्टाईक, 4. चीनी, 5. द्रविड़, 6. आस्ट्रो-एशियाटिक, 7. जापानी-कोरियाई, 8. मलय-पालिनेशिक्न, 9. भारोपीय।
03.आंशात महासागरीय खण्ड : 1. मलय-पालिनेशियन।
04.अमरीका खण्ड : इसमें 100 अमरीकी परिवार आते हैं।

यूरेशिया खण्ड के नवम् भेद से भारोपीय की उत्पत्ति हुई है और इस भारोपीय के दस प्रकार हैं :

01.केल्टिक (आयरिश, वेल्श,....),
02.इटैलिक या लैटिन (स्पेनी, पुर्तगाली, इतालवी, फ्रेंच,....),
03.जर्मनिक : 1.पश्चिमी (जर्मन, अंग्रेजी...च,...), 2.उत्तरी (स्वेडिश, नार्वेजियन, आइसलैंडिक.....)

* सहायक प्राध्यापक, महात्मा गांधी स्ना. महाविद्यालय खरसिया (छत्तीसगढ़) भारत। (आजीवन सदस्य)

© लेखक 2013, एम.पी.ए.एस.सी.अे.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित, सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : manceshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

04.ग्रीक या हेलेनिक,
05.इत्ती,
06.तोखारी,
07.इलीरियन,
08.बाल्टिक (लिथु आए,लेट्टिश),
09.स्लाव (रूसी चेक,बुल्गे0,पोलिश,....),
10.भारत-ईरानी : 1. ईरानी (अवेस्ता,फारसी,पश्तो,....), 2. दरद, 3. भारतीय आर्य भाषा

इस भारतीय आर्य भाषा को आगे ले जाने से पहले आर्यों के भारत प्रवेश एवं इनसे पूर्व भारत की मूल जाति एवं उनके प्रवेश पर संक्षिप्त जानकारियाँ आवश्यक है। भारत (भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका) में आर्यों के पहले आने वाली जातियाँ निम्नांकित चार हैं- 1. नेग्रिटो, 2. आस्ट्रिक, 3. किरात, 4. द्रविड़।

नेग्रिटो : यह प्राचीनतम जाति है जिसका भारत भूमि पर पता है। नेग्रिटो मूलतः अफ्रीका के निवासी थे और ये दक्षिणी अरब, ईरान होते भारत आये थे।

आस्ट्रिक : नेग्रिटो लोगों के बाद आस्ट्रिक आए। इनका मूल स्थान भूमध्यसागर माना जाता है। ये इराक, ईरान होते भारत आये। ये बहुत पहले से इंडोनेशिया होते आस्ट्रेलिया पहुँच गए थे। वहाँ अब भी ये लोग हैं। भारत की कोल, मुण्डा, खासी, मोनख्मेर, निकोबारी आदि भाषाएँ इन्हीं की हैं। प्राचीन भारत में आस्ट्रिकों को निषाद, सौद्युम्न, कोल्ल, भिल्ल, पुलिंद, शबर आदि नामों से पुकारा गया है।

किरात : आस्ट्रिक लोगों के बाद किरात भारत आए। ये लोग मूलतः याङ्-त्सी-क्वांग नदी के मुहाने के पास रहने वाले आदि मंगोल थे। इन्हीं की एक शाखा चीनी सभ्यता एवं संस्कृति का निर्माता बनी। दूसरी ब्रह्मपुत्र के रास्ते भारत आई। अब ये लोग केवल हिमाचल प्रदेश, नेपाल, भूटान, असम, मणिपुर तथा उत्तरी बंगाल में हैं। इनकी प्रमुख भाषाएँ मेइथेइ, कचिन, नगा, गारो, बोड़ो, लोलो, कुकीचिन, लेप्चा तथा नेवारी है।

द्रविड़ : इनका मूल स्थान अफ्रीका है। वहाँ से ये लोग भूमध्य सागर आए फिर ईरान, अफगानिस्तान से लेकर पूर्वी भारत तक फैल गए। भारत में ये लोग 4000 ई.पू. के बाद आए। आज तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम के अतिरिक्त तुलु, कोडगु, कोलमी, टोडा, गोंड (मध्यभारत), खन्द (उड़ीसा), औरांव (बिहार), ब्राहुई (बलुचिस्तान) तथा माल्तो (राजमहल की पहाड़ियां) आदि इनके वृहत् भाषा क्षेत्र के अवशेष हैं।

भारत में आर्यों का प्रवेश

भारतीय आर्य, ईरानियों एवं दरद लोगों से अलग होकर 1500 ई.पू. के आसपास पश्चिमी एवं पश्चिमोत्तरी सीमा से भारत में प्रविष्ट हुए। इस संदर्भ में हार्नले ने पन्थर सिद्धांत दिया। इनके अनुसार परवर्ती आर्य (भीतरी) ही वैदिक संस्कृति के निर्माता थे। रमाप्रसाद चंद के अनुसार भीतरी शाखा के लोग लंबकपाली प्रजाति के हैं, तो बाहरी शाखा के लोग लघुकपाली प्रजाति के। प्रथम वैदिक संस्कृति के अधिष्ठाता तो दूसरे वैष्णव एवं शाक्त धर्म के। आर्य पहले सप्तसिन्धु (आधुनिक पंजाब) में आये फिर धीरे-धीरे मध्यदेश कोसल होते हुए अवन्ती और बंगाल तक फैल गये। पहले इनको दास, दस्यु या शूद्र (द्रविड़) लोगों से युद्ध करना पड़ा। पूर्व में कदाचित् निषादों एवं किरातों से भी संघर्ष हुआ किन्तु सर्वत्र इनकी विजय हुई और अंत में उत्तरी भारत पूर्णतः इनका हो गया।

भारतीय आर्य भाषा

उत्तर भारत की सबसे प्राचीन भाषा के रूप में वैदिक भाषा उपलब्ध है जिसमें वेदों की रचना हुई। इन वेदों में ऋग्वेद की भाषा बहुत प्राचीन है। अन्य तीनों वेद बहुत बाद में लिखे गए। इसीलिए ऋग्वेद और अथर्ववेद की भाषा में आकाश-पाताल का अंतर है।

वैदिक भाषा व्याकरण की दृष्टि से विकल्प प्रधान एवं संश्लिष्ट थी। अतः लौकिक संस्कृत के रूप में इसे सरल बनाया गया।

संस्कृत भाषा (प्राचीन भारतीय आर्य भाषा-1500 ई.पू.से 500 ई.पू.) व्याकरण के नियमों की कठोरता के कारण केवल पंडितों की बनकर रह गई तो जन सामान्य की भाषा का विकास पालि (मध्य कालीन भारतीय आर्य भाषा–प्रथम प्राकृत- 500 ई.पू. से 1 ई.) एवं प्राकृत (मध्य कालीन भारतीय आर्य भाषा–द्वितीय प्राकृत- 1 ई. से 500 ई.) के रूप में हुआ। ब्राह्मण धर्म के ग्रंथ-संस्कृत में, बौद्ध धर्म के-पालि में एवं जैन धर्म के ग्रंथ-प्राकृत में लिखे गए।

जब पालि एवं प्राकृत को व्याकरण के नियमों में जकड़ दिया गया एवं इसमें साहित्य रचना होने लगी तब इसका विकास अवरूद्ध हो गया और जनभाषा के रूप में अपभ्रंश (मध्य कालीन भारतीय आर्य भाषा–तृतीय प्राकृत- 500 ई. से 1000 ई.) का विकास हुआ।

अपभ्रंश भी जब व्याकरण के नियमों में जकड़ दी गई एवं साहित्य की भाषा बनकर पंडितों तक सीमित हो गई तब जनभाषा वर्तमान आर्यभाषाओं के रूप में विकसित हुई।

वर्तमान आर्यभाषा का प्राचीन काल (1000 ई.से 1500 ई.) : इस काल की हिन्दी में तद्भव शब्दों की प्रधानता थी। इस समय हिन्दी की उपभाषाओं/ बोलियों के रूप में प्रमुख रूप से डिंगल, ब्रजभाषा, मैथिली, खड़ी बोली, पंजाबी एवं अवधी थी।

वर्तमान आर्यभाषा का मध्य काल (1500ई.से 1800ई.) : इसमें संस्कृत तत्सम शब्दों को ग्रहण किया जाने लगा। विदेशी ध्वनियां क, ख, ग, ज, फ हिन्दी में सम्मिलित हो गई। साहित्यिक दृष्टि से ब्रजभाषा एवं अवधी ही समृद्ध रही। वास्तविकता यह कि ब्रजभाषा ही साहित्यिक भाषा थी। सूर की ब्रजभाषा दैनिक व्यवहार की, बिहारी की ब्रजभाषा साहित्य की।

वर्तमान आर्यभाषा का आधुनिक काल (1800ई.से अब तक) : इसमें कुछ वर्षों में ही पद्य की साहित्यिक भाषा- ब्रजभाषा का साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और गद्य की खड़ी बोली ने पद्य पर अधिकार कर लिया।

इसका क्रमिक विकास तीन चरणों में सम्पन्न हुआ :

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (1500ई.पू.से 500ई.पू.)
2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा (500ई.पू.से 1000ई.)
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषा (1000ई.से अब तक)

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (1500ई.पू.से 500ई.पू.) के रूप में संस्कृत के भी दो रूप थे- 1. वैदिक संस्कृत- इसमें वेदों की रचना हुई। 2. लौकिक संस्कृत- इसमें रामायण, महाभारत की रचना हुई।

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा (500ई.पू.से 1000ई.) में तीन भाषाओं ने स्थान पाया है- पालि, प्राकृत और अपभ्रंश। इनका क्रमिक काल इस प्रकार है- 1. प्रथम प्राकृत (पालि)- इसका काल 500 ई.पू.से 1 ई. तक रहा। 2. द्वितीय प्राकृत (प्राकृत)- इसका काल 1 ई.से 500 ई. तक रहा। 3. तृतीय प्राकृत (अपभ्रंश)- इसका काल 500 ई.से 1000 ई. तक रहा।

अपभ्रंश

भोलानाथ तिवारी के अनुसार इसके 07 भेद हैं :

1. शौरसेनी :

1.1 पश्चिमी हिन्दी : इसके भेद हैं- ब्रजभाषा, बाँगरू, खड़ी बोली, हरियाणी, कन्नौजी, बुन्देली, तोमरी, कौरवी, निमाड़ी। यही खड़ी बोली ही आज की हिन्दी है।

1.2 राजस्थानी : इसके भेद हैं- मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी, हाड़ौती, किशनगढ़ी, अजमेरी, डिंगल, सौराष्ट्री।

1.3 गुजराती

2. महाराष्ट्री :

2.1 मराठी

3. अर्द्धमागधी :

3.1 पूर्वी हिन्दी : इसके भेद हैं- अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।

4.मागधी :

4.1 बिहारी : इसके भेद हैं- भोजपुरी, मगही, मैथिली, वज्जिका।

4.2 बंगला

4.3 उड़िया

4.4 असमिया

5.टक-केकय या पैशाची :

5.1 पंजाबी

5.2 लहंदा

6.ब्राचड़ :

6.1 सिन्धी

7.खस :

7.1 पहाड़ी : इसके भेद हैं- कुमाऊँनी, गढ़वाली, पश्चिमी पहाड़ी।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि हरियाणवी के अन्य नाम बांगरू, खड़ी बोली के अन्य नाम कौरवी, अवधी के अन्य नाम कोशली/ वैशवाड़ी तथा पाली के अन्य नाम मागधी है।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषा (1000ई.से अब तक) का क्रमिक विकास इस प्रकार है :

1. आदिकाल (993 ई. से 1318 ई.)- डिंगल/ पिंगल का प्रयोग।

2. भक्तिकाल (1318 ई. से 1643 ई.)

2.1 सगुण भक्ति काव्य

2.1.1 राम भक्ति शाखा- अवधी भाषा का प्रयोग।

2.1.2 कृष्ण भक्ति शाखा- ब्रजभाषा का प्रयोग।

2.2 निर्गुण भक्ति काव्य

2.2.1 प्रेमाश्रयी- अवधी भाषा का प्रयोग।

2.2.2 ज्ञानाश्रयी

3. रीतिकाल (1643 ई. से 1843 ई.)- ब्रजभाषा का प्रयोग।

4. आधुनिक काल(1843 ई.से....) या गद्य काल

भारतेंदु युग से पूर्व गद्य साहित्य में हिन्दी का विकास

1. राजस्थानी गद्य (तेरहवीं सदी) : लेखक - मुनि जिन विजय, कृति - आराधना, अतिचार, बाल शिक्षा।

2. ब्रजभाषा गद्य (चौदहवीं सदी) : इसमें ब्रह्मज्ञान और हठयोग पर तीन प्राचीन ग्रंथ। इसके बाद के लेखक और कृति- विट्ठलनाथ -श्रृंगार रस मंडन, गोकुलनाथ -चौरासी वैष्णवन की वार्ता, -दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता। वैकुण्ठमणि शुक्ल -अगहन महात्म्य, बैशाख महात्म्य, नाभादास -अष्टयाम, वैष्णवदास -भक्तमाल आसंग, बनारसीदास -बनारसी बिलास।

इसके बाद 18वीं, 19वीं सदी में- केशव -राम चन्द्रिका, रसिक प्रिया, बिहारी -सतसई।

3. खड़ी बोली गद्य : इसमें सबसे प्राचीन रचना अकबर के राज दरबारी कवि गंग द्वारा लिखित 'चंद छंद बरनन की महिमा' है। किंतु इसमें खड़ी बोली एवं ब्रजभाषा का मिला जुला रूप मिलता है। खड़ी बोली का परिष्कृत रूप सन् 1741 ई0 में रामप्रसाद निरंजनी द्वारा लिखित 'भाषा योग वशिष्ठ' में दिखाई देता है। पं0 दौलतराम ने 'पद्म पुराण' लिखा।

4. भारतेंदु युग से पूर्व : (अ) फोर्ट विलियम कालेज के चार प्राध्यापकों की देन- 1. इंशा अल्लाह खाँ- रानी केतकी की कहानी, 2. मुंशी सदासुख लाल- सुख सागर इनकी रचना में पुराने कथावाचकों जैसी पंडिताऊपन दिखाई देती है। 3. लल्लुलाल- प्रेमसागर, सिंहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी। 4. सदल मिश्र- नासिकेतोपख्यान। (ब) दो राजाओं की देन-

1. शिवप्रसाद 'सितारे हिंद'- आप शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर थे। आपने अरबी-फारसी मिश्रित भाषा का प्रयोग किया।
2. राजा लक्ष्मण सिंह -शकुन्तला आपने संस्कृतनिष्ठ परिमार्जित भाषा का प्रयोग किया।

आधुनिक काल

1. *भारतेंदु युग (1843-1903)* : ब्रजभाषा का प्रयोग।
2. *द्विवेदी युग (1903-1918)*/ पूर्व प्रेमचंद युग। -खड़ी बोली का प्रयोग।
3. *छायावाद (1918-1936)*/प्रेमचंद युग/ प्रसाद युग/ शुक्ल युग। -खड़ी बोली का प्रयोग।
4. *प्रगतिवादी (1936-1943)*/प्रेमचंदोत्तर/ शुक्लोत्तर/ प्रसादोत्तर युग। -खड़ी बोली का प्रयोग।
5. *प्रयोगवाद (1943-1954)* -खड़ी बोली का प्रयोग।
6. *नयी कविता (1954-1964)* -खड़ी बोली का प्रयोग।
7. *अकविता (1964-अब तक)*/साठोत्तरी/ समकालीन/ अभिनव/ युयुत्सवादी/ बीट/ अस्वीकृत/ अति/ सहज/ निर्दिशायामी कविता -खड़ी बोली का प्रयोग।

इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता (1947 ई.) के बाद की रचना (कहानी, निबंध, एकांकी आदि) के लिए स्वातंत्र्योत्तर युग नाम आया। काव्य के क्षेत्र में 1960 ई. के पश्चात् गीतात्मक रूपेण एक परम्परा चली, वह है-'नवगीत', जिसके सूत्रधार रहे- अज्ञेय जी। कहानी के क्षेत्र में 1950 के आसपास 'नई कहानी', 1960 के आसपास 'अकहानी', 1964 के आसपास 'सचेतन कहानी' एवं इसके अतिरिक्त 'समकालीन कहानी' तथा 'समानान्तर कहानी' का भी सूत्रपात हुआ।

निष्कर्षत

हिन्दी के विकास को हम इस प्रकार से व्यक्त करते हैं :

विश्व भाषा
|
यूरेशिया
|
भारोपीय
|
भारत-ईरानी
|
भारतीय आर्य भाषा
|
संस्कृत
|
पालि
|
प्राकृत
|
अपभ्रंश
|

1.शौरसेनी	2.अर्द्धमागधी
|	|
पश्चिमी हिन्दी	पूर्वी हिन्दी
|	|
1.खड़ी बोली(हिन्दी) 2.ब्रजभाषा	अवधी
(गद्य की भाषा) (पद्य की भाषा)	(पद्य की भाषा)

संदर्भ

पाठक 'बर', डॉ.दान बहादुर; भार्गव, डॉ. मनहर गोपाल : भाषा विज्ञान स्व ज्ञान आधारित जानकारियाँ।
तिवारी, भोलानाथ : भाषा विज्ञान।